● **पढ़ो और गाओ :**

८. बीज

किसी नदी के किनारे एक बीज पड़ा था । वह बहुत छोटा था । वहाँ एक चिड़िया आई । वह चोंच मारकर बीज को खाने लगी । तब बीज बोला–

" रुकी रहो, रुकी रहो, जमीन में गड़ने दो ।
डाल-पात होने दो, तब मुझे तुम खाना ।"

चिड़िया चीं-चीं करती उड़ गई ।

कुछ दिन बाद पानी बरसा । पानी और धूप पाकर बीज में अंकुर फूटा । कुछ दिन बाद वहाँ एक बकरी आई । कोंपलें देखकर उसके मुँह में पानी भर आया । वह उन्हें खाने चली । तब कोंपल ने कहा–

"रुकी रहो, रुकी रहो, जड़ को गहरे जाने दो ।
पानी, खाद खाने दो, तब मुझे तुम खाना ।"

बकरी यह सुनकर में-में करती चली गई ।

थोड़े दिनों के बाद बीज एक छोटा-सा पौधा बन गया । एक दिन गाय वहाँ आई । उसने पौधे को खाने के लिए मुँह खोला । इतने में पौधे ने कहा –

"रुकी रहो, रुकी रहो, डाल-पात होने दो ।
पानी, खाद खाने दो, तब मुझे तुम खाना ।"

यह सुनकर गाय रँभाती हुई चली गई ।

बहुत दिन बीत गए । उसकी डालें बड़ी-बड़ी हो गईं । एक दिन फिर वही चिड़िया, बकरी और गाय वहाँ आईं । उन्होंने एक-दूसरे से पूछा, ''वह छोटा पौधा कहाँ गया ?'' तभी पेड़ बोल उठा– "मैं ही बीज हूँ ..... मैं ही अंकुर हूँ । मैं ही पौधा हूँ ..... मैं ही पेड़ हूँ । अब मैं तुम सबके काम आ सकता हूँ ।" यह सुनकर सब खुश हो गए ।

– रामेश्वरदयाल दुबे

१. निम्नलिखित वाक्यों को क्रमबद्ध करके पुनः पढ़ो :

(क) पानी और धूप पाकर बीज में अंकुर फूटा ।
(ख) किसी नदी किनारे एक बीज पड़ा था ।
(ग) अब मैं तुम सबके काम आ सकता हूँ ।
(घ) उसकी डालें बड़ी-बड़ी हो गईं ।

२. चने को गीली मिट्टी में बोओ और अंकुरित होकर पौधा होने तक उसका निरीक्षण करो ।

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह के साथ कविता का वाचन करें । ध्यान से सुनने के लिए कहें । उचित लय के साथ सामूहिक, गुट एवं एकल वाचन कराएँ । कहानी में आई कविता विद्यार्थियों को अपने शब्दों में सुनाने के लिए प्रेरित करें ।